Drought conditions bordering on famine Prevail in Tirunelveli, Kudukottai ana Dharamapuri Districts of the State. The situation in rhe North Arcot, South Arcot, Trichy and Tanjore Districts is equally bad. Paddy crops over an area of 17,000 hectares are lost in Tanjore District alone, which is supposed to b[e] the rice bowl of the State. In otner district[S] the standing crops are withering and agri cultural operations are at a standstill' The condition of agricultural labour in ths villages has become pittable. Almost all he irrigation tanks and wells are dried up, and there is no water even to drink.

Fortunately, our Finance Minister wno is now touring trie State also belongs to that State, and if he makes an assessment of the drought conditions, I will be very happy. But he is said to be in Madras on some other mission, namely, poll alliance. He is there at Madras now discussing with his collegaues whether to have an alliance with Mr. Kamraj or with any other person, Sir, he was interested m replying to questions relating to matter[s] on individuals like Mr. Biju Patnaik and others. But I do not know how far he will be interested in solving this problem which is concerning 4.5 crore people of his own State. The State Government has appealed to the Centre for drought relief in tne form of one lakh tonnes of rice per month and also for a good quantum of subsidy in the shape of grants. I would lik[e] to appeal that the Centre should give imme. diately an amount of not less than Rs. 30 crores. In this connection, the Finance Minister has said—

> "If an extraordinary situation arises where all these provisions will not be adequate, we are not going to say that the Sixth Finance Commission has reco. mmended and whatever might be the magnitude of human misery, we are not going to look into it."

I want to mention that the situation in Tamil Nadu is now extraordinary and so immediate help should be rushed to the state and it should not be cut from the Plan amount.

Finally, Sir, I would like to mention one or two tnings in tnis regard. The State Government has fixed the maximum retail prices of paddy and rice in order to help the poor public. The concurrence of the Centre is awaited.

Secondly, the Government of Tamil Nadu has formulated a crash programme to energise about 60,000 pumpsets in the State to incrase food production. But the great difficulty we are experiencing is the shortage of raw materials particularly aluminium conductors. The Union Government has been already represented to allot more aluminium for the manufacture of conductors. Again I appeal that the Central Government should immediately grant a sum of Rs. 30 crores to the State.

REFERENCE TO DEATHS DUE TO COLD WAVE

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन् हम को दो बातें कहनी हैं । मैं आज बहुत ही दुख के साथ इस विषय को सदन के सामने रख रहा हूं और मैं समझता हूं कि इस सदन के सम्मानित सदस्य भी अगर समाचार पत्रों को पढ़े होंगे तो शायद उन में से कुछ को दुख हुआ होगा और कुछ तो अट्टाहास भी किये होंगे । अभी अभी सदन में चर्चा चल रही थी कि संसद के सदस्यों का आने जाने का किराया जो है उस में कुछ बढोतरी की जाय । हमारे सामने जब भी यह चर्चा आयी हम को यह समझने में देर नहीं लगी कि हम को इस को बिलकुल इन्कार कर देना चाहिए और पहले ही हम ने इन्कार कर दिया कि इस पापकर्म को हम नहीं करेंगे । तो देखा जाय कि आज हमारे देश में शीत लहरी चल रही है और उस से हजारों लोग मर चुके हैं । समाचार पत्रों में जो आंकडे आए हैं उन के अनुसार तो सब से ज्यादा मरने वालों की संख्या बिहार में है । बिहार में 112, उत्तर प्रदेश में 42, और अब यह 78 हो गये हैं, और काश्मीर में 36 आदमी मरे हैं, और इसी प्रकार राजस्थान और मध्य प्रदेश के

[श्री राजनारायण]

आंकड़े भी हैं, समाचार पत्रों में। इस का कारण है, कपड़े की कमी और कितने ही लोगों की खबरें हम को मिली नहीं। यह खबरें उनकी हैं जिन के बारे में समाचार पत्र जान सके हैं। तो मैं कहना चाहता हूं कि पिछले कई सालों के सरकारी आंकड़ों को पढ़ कर जो हम ने आंकड़ा निकाला है उस के अनुसार 42 करोड़ लोग इस देश में ऐसे हैं जिन की आमदनी प्रतिदिन एक रुपये से कम है, उन लोगों के खाने के लिए क्या इंतजाम सरकार कर रही है, उन के कपड़े का क्या इंतजाम सरकार कर रही है, उन के निवास का क्या इंतजाम सरकार कर रही है। लगातार इस सरकार का प्रयत्न यही रहा है और इसी भ्रमजाल में वह लोगों को फंसे हुए है कि कैसे किस मिनिस्टर को कार मिले, कैसे किस को कितना रुपया मिले, कौन डिप्टी मिनिस्टर हो, कौन स्टेट मिनिस्टर हो, कौन कैबिनेट स्तर का मंत्री बने। इसी में लगातार सब लगे हुए हैं और हमारे कुछ मित्र लोग हैं कि जो इस सरकार को प्रगतीशील, तरक्कीपसंद और क्रांतिकारी समझ कर, उसे समाजवादी विशेषण देने में अघाते नहीं। मैं उन से पूछना चाहता हूं कि आज कितने ऐसे देश हैं, वह कौन से अभागे देश हैं और वह कौन सी पापी और पाजी सरकार है कि जिस के शासन में शीत की लहरी से और जेठ की चिलचिलाती दोपहरी में धूप से लोग मरते हों, झुलसते हों। यह हमारा ही देश है जहां शीत से ठिठोर कर हम लोग मर रहे हैं, और जेठ में झुलस कर मर रहे हैं। इस के बारे में मैं चाहूंगा कि आप भी सोचें, हमारी राज्य सभा का सचिवालय भी सोचे, जो लोग यहां बैठे हैं, सरकारी कर्मचारी हैं, अफसर हैं, वह भी सोचें। तनख्वाहें बढ़ाने की बात आती है तो अफसर लड़ेंगे, सेक्रेटरी और सेक्रेटरी जनरल भी लड़ेंगे, मगर उन के बारे में कौन सोचता है। आज उन की चिन्ता कौन करता है कि हमारे देश के गरीबों का कष्ट कैसे दूर होगा, कैसे उन का उद्धार होगा इस के बारे में कौन सोचने वाला है ?

जहां तक हमारी शक्ति है हम सोचते हैं। यही कारण है कि हमने घरबार छोड़कर जंगल में रहने का रास्ता बनाया है। कैसे बेहया लोग हैं ये कि ऐसे विषयों पर बोलने पर भी हल्ला मचाना आता है क्यों कि वह तो लाठी मार रहे हैं, लम्बी चौड़ी पगड़ी बंधी है, उनको कहां ठंडक लगेगी? . . . (*Interruptions*)

श्री रणबीर सिंह : 'बेहया' शब्द अनपार्लियामेंटरी है, इसको वापस लीजिए।

श्री राजनारायण : हम वापस ले लेते हैं। लंबी चौड़ी पगड़ी तो अनपार्लियामेंट्री नहीं है। हमारा कोई शब्द ऐसा नहीं है जो अनपार्लियामेंटरी हो। तो मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि सदन के सम्मानित सदस्यों को, सत्ताधारी दल के लोगों को कि कसी चुलबुलाहट हो गई है, इस से आप सोच सकते हैं कि उनके अन्दर कितनी गम्भीरता है। जहां पर इस गरीबी का वरण हो रहा है, जहां उसकी चर्चा हो रही है, तहां पर भी हमारे सदन के सम्मानित सदस्यों को चुलबुलाहट होती है। श्रीमन, ऐस मौके पर मुझे जमन फिलासफर की याद आती है, उसने एक वाक्य लिखा कि मैं भारत गया। पहले मैं ईश्वर में यकीन नहीं करता था। मगर भारत भ्रमण करने के बाद हमने देखा कि फ्राम टाप टु बौटम, प्रधान मंत्री से लकर चपरासी तक सभी रिश्वतखोर हैं, कुनबापरस्त हैं अपने घर अपने परिवार को देखते हैं समाज और राष्ट्र को कोई नहीं देखता। इस लिए जिस देश में समाज और राष्ट्र को देखने वाला कोई न हो, केवल अपना कुनबा देखें, वह देश चल कैसे सकता है। अगर भगवान न हो ? इसलिए मैं श्रीमन्, कहना चाहता हूं कि बेहयायी की सीमा रुके

इन गम्भीर मसलों पर, विचार करें कि यह देश कैसे चलेगा, इस देश का गरीब कैसे तरक्की करेगा, इस देश के गरीबों का कैसे उद्धार होगा। गरीबी मिटाने के नाम पर गरीबों को लाठी से मार-मार कर, आग जला - जला कर, उनके घरों को उजाड़-उजाड़ कर आज इस स्थिति में देश को ला दिया है कि शीत लहर में हजारों हजार नौजवान मर रहे हैं। मैं इसी ओर ध्यान आकर्षित करा रहा हूं।

DEMAND FOR BUS FACnjTTES FOR STUDENTS OF DEAF AND DUMB SCHOOL

श्री ओइम् प्रकाश त्यागी : उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक बहुत ही गंभीर विषय की ओर सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं। दिल्ली नगर में एक राजकीय स्कूल है जो इस नगर के अंधे, मूक और बधिर बच्चों के लिए है। जो अन्धे और बहरे हैं उन बच्चों के स्कूल में छात्रों की संख्या 500 थी। पहले दो बसें उसमें थीं, जो घरों से बच्चों को ले जाती थीं, परन्तु वे बसें बेकार हो गई और उनको नीलाम कर दिया गया है। अब उस स्कूल में यह अवस्था हो गई कि क्लास में केवल चार चार बच्चे रह गये हैं। स्कूल लगभग बन्द है। दो वर्षों से वह बच्चे सरकारी बसों में बैठने के लिए जाते हैं और यहां की सरकारी बसों की हालत आपको पता है कि कैसे बहरे और गूंगे बच्चे, अन्धे बच्चे उन बसों में जायेंगे। बहरे बच्चे जायेंगे तो वह क्या बोलेंगे।

श्रीमती सविता बहिन : बहरे बच्चे तो बता सकते हैं कहां जाना है।

श्री ओइम् प्रकाश त्यागी : बहनजी, जो बहरा होता है वह गूंगा भी होता है। आप दिल्ली की रहने वाली हैं आपको पता होना चाहिए। तो मैं कहना चाहूंगा कि दिल्ली में जो सरकारी स्कूल अंधे, गूंगे और बहरे बच्चों के लिए है, जिसमें पहले सरकारी बस थी वह अब नहीं है और वह स्कूल दो साल से चलना बन्द हो रहा है। मैं ध्यान दिलाना चाहता हूं कि वहां पर सरकार बसों का इंतजाम करे ताकि वह अंधे, बहरे और गूंगे बच्चों का स्कूल चालू रह सके।

श्रीमती सविता बहिन : मैं भी इस बात का समर्थन करती हूं कि इन बच्चों को बहुत तकलीफ हो रही है। पेरेन्ट्स की अप्लीकेशंस आ रही हैं कि किस तरह से उनको एडमिट कराया जाए और भेजा जाए। इस बात को फिर से देखना चाहिए कि उन बसों को फिर से कैसे चालू किया जाए ताकि ऐसे बच्चों को सुविधा मिल सके।

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Yes, Mr. Advani, you wanted to mention something.

REFERENCE TO NOTICE OF PRIVILEGE MOTION

श्री राजनारायण : मैं विशेषाधिकार के प्रश्न पर आपसे निवेदन करना चाहता हूं। चेयरमैन साहब से मैंने बात की थी, चेयरमैन साहब ने मुझ को कहा था कि आज प्रधान मंत्री जी की तरफ से लिख कर आ जाएगा। मैं प्रधान मंत्री के विरुद्ध विशेषाधिकार की अवहेलना का प्रश्न उठाना चाहता हूं। 12 दिसम्बर, 1974 को उन्होंने कहा था कि 'नहीं पाती'। ओरियन्टल फायर जनरल इन्शोरेंस के बारे में।

12 दिसम्बर को सदन में प्रधान मंत्री से पूरक प्रश्न के द्वारा स्पष्टीकरण चाहा था, वह यह कि क्या ओरियन्टल फायर जनरल इन्श्योरेन्स एजेंसी से संबंधित श्रीमती सोनिया गांधी को 10 हजार रुपए प्रतिमास मिलते हैं या नहीं ? मेरे पूरक प्रश्न का उत्तर डा० शंकर दयाल शर्मा ने देते हुए कहा कि किसी भी मंत्री के बेटे या रिश्तेदार को कहीं भी काम करने की स्वतंत्रता है। इस पर डा० शर्मा ने स्वीकार किया कि श्रीमती सोनिया गांधी ओरियन्टल फायर जनरल इन्श्योरेन्स कंपनी की एजेंट हैं।

मेरा प्रश्न सीधे प्रधान मंत्री से था क्योंकि वे यहां पर बैठी हुई थीं और विषय भी उनसे